ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

उत्तर आधुनिकतावाद वैचारिक स्वरूप

सारांश

विचारों का गुम्फन ही साहित्यकार को श्रेष्ठता की ओर लेजाकर अमर बनाता है। आधुनिकतावाद के आँचल में उत्तर आधुनिकतावाद रूपी नये विचारों का फूल खिलता है। वर्तमान युग शैक्षिक–क्रान्ति का युग है। मॉस–मीडिया नई प्रौद्योगिक उपलब्धियों, उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण, नवसाम्राज्यवाद, नवसांस्कृतिक साम्राज्यवाद पूँजीवाद, डिजिटल कम्यूटर युग के मध्य उत्तर आधुनिकतावाद की गूँज स्पष्ट सुनाई दे रही है। नई वैचारिकता ने अप्रत्यक्ष रूप से समाज एवं जनमानस के हृदय एवं मस्तिष्क को जकड़ रखा है। उत्तर आधुनिकतावाद मानव, ईश्वर, धर्म, राजनीति तक को मृतः मानते हुए नये संसार की आकांक्षा करने लगता है। उत्तर आधुनिकता के बेल साहित्यकार पर भी आच्छादित है। डॉ0 कृष्णदन्त पालिवाल मानते हैं कि उत्तर आधुनिकतावाद अपनी कोरन से बंजर है उसके पास न कोई विचारधारा है न कोई दर्शन। इस उत्तर आधुनिकतावाद का दरवाजा उत्तर संरचनावाद (पोस्ट इस्ट्रक्चरलिज्म) की ओर खुलता है। उत्तर आधुनिकतावाद की वैचारिकता साहित्य एवं विचारो का केन्द्र विन्दु है। अतः हमें नये साहित्य, नवीन तथ्यों पर मन्थन, चिन्तन–मनन करना है।

मुख्य शब्द : आधुनिकतावाद, नवसाम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद

कुन्दे रानी डे
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
बी0 एन0 डी0 राजकीय
स्नात्कोत्तर महाविद्यालय,
चियनपुरा, शाहपुरा,
जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

उत्तर आधुनिकता की अनुगूँज 8वें दशक में भारत में पंख फैलाकर कुछ नया सोचने–विचारने के लिए साहित्यकारों को बाध्य कर रही थी। हिन्दी लघु पत्र–पत्रिकाओं में गर्म बहस जारी थी। वैचारिक मान्यता के साथ विकासशील देशों में पिछड़े वंचितों दलितों हासिये में स्थित जनमानस को एक चुनौती का सामना करते हुए समाज में अपने अस्मिता की रक्षा करना था। सामाजिक स्थिति गंभीर थी और राजनीतिक स्थिति गर्म। ऐसे में अभिजात्य वर्ग का विखंडन कर केन्द्र से उन्हें बेदखल करने का प्रयास जारी था। उत्तर आधुनिकतावादी विद्वान ते मानव इतिहास विचारधारा एवं ईश्वर के अन्त की घोषणा करने तक नहीं चूके थे। रचना धर्मिता द्वारा नये विचारों की प्रस्तुति साहित्यकार कर रहे थे। वही लेखक का भविष्य पाठक पर निर्भर दिखायी दे रहा था। लाइनल ट्रिलिंग ने 5वें दशक में एक लेखक का अन्त लिखा जिसमें उन्होंने दावा किया कि ''वर्तमान समय पाठक का है, महत्व लेखक का नहीं पाठक का है।''[1]

उत्तर आधुनिकतावादी मानते हैं कि मानव श्रृष्टि का सर्वोच्च प्राणी है, केन्द्र है। तर्क शक्ति के कारण वह श्रेष्ठ है लेकिन उच्च श्रृंखल बन गया है, उसकी श्रेष्ठ होने की महानता को कम किया जाय। उन्होनें पराभवतिकता पर अविश्वास की दीवार चुनौती के रूप में खड़ी कर दी है। बहुसंस्कृतिवाद, बहुलतावाद को प्रमुख स्थान दिया। उपनिवेशवाद, फॉसीवाद, वैश्वीकरण, कम्प्यूटराइजेशन, डिजिटलाइजेशन, मास–मीडिया, प्रचार–प्रसार, पाश्चात्य संस्कृति के अनुसरण का साहित्य पर पूर्णतयः प्रभाव पड़ा। साहित्य में नये की खोज पुराने का त्याग उद्घोषण होने लगी। मानव भूकम्प आया हो। जिसमें पुरानी साहित्यिक परम्परा, रीति–नीति चरमरा कर टूट कर विखर गई हो। हिन्दी कविता और साहित्य नये वैचारिक धाराणाओं के पंख लगाकर उड़ने लगा। भाषा का अंग्रेजीकरण अंग्रेजी शब्दों का हिन्दीकरण होने लगा। भाव भाषा एवं वैचारिकता को नये थर्मामीटर के पैमाने पर परखा जाने लगा। सभ्यता के नये मोड़ पर खड़ा उत्तर आधुनिकतावाद का साहित्य कल्पना के साथ यथार्थ से जमीनी जुड़ाव रखने लगा।

उत्तर आधुनिकतावादी विद्वानों में ल्योतार का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वे उत्तर आधुनिकतावाद को आधुनिकता से जोड़कर देखते है। उसी का विस्तार मानते हैं।[2]

विद्वान उत्तर आधुनिकतावाद को वृद्धि पूँजीवाद की एक लुप्त होती छवि अथवा पूँजीवद की संतान जिसका कारण तकनीकि प्रवृत्ति की स्वीकारते हैं। उनका मानना है, कि जनमाध्यमों संस्कृति, सूचना, प्रौद्योगिकी और विज्ञापनों के मामले आये परिवर्तन के कारण वैश्विक मानवीय जीवन–शैली में परिवर्तन आया है। इसके विमर्श का प्रारम्भ संस्कृति क्षेत्र में हुयी जिसमें तर्क तथा साहित्य के अंत की घोषण होती है। संस्कृति साहित्य का खंडन–विखंडन विकेन्द्रीकरण होता है।[3] डॉ0 रवि श्रीवास्तव कहते है–उत्तर आधुनिकतावाद एक विशेष काल खण्ड है। वह एक औद्योगिक समाज भी है उस समाज की मुख्य चालक शक्ति विज्ञान और ''प्रौद्योगिकी'' है। भूमण्डलीकरण विश्वग्राम और संचार क्रान्ति उसी की पल्लव हैं। उत्तर आधुनिकतावाद इस विशिष्ट औद्योगिक समाज की नयी जीवनशैली का अध्ययन करता है। सांस्कृतिक एवं भाषायी बहुलवाद उत्तर आधुनिकतावादी चिन्तन का अनेकांतवाद है और पूँजी संचय उसका एकांतवाद।[4] उनका मानना है कि उत्तर आधुनिकतावाद की विचारधारा स्पष्ट तौर पर कम्यूनिष्ट विरोधी है। वह संतान और सम्पत्ति के पूजक जिन अर्थ दिशाओं के हाथों में कमान सौंपकर पूरी तर निश्चिन्त होना चाहती है, वह पूरी दुनिया को अमेरिकी उपभौक्तावादी समाज की हमशक्ल बना देने के लिए कृत संकल्प भी है। उत्तर आधुनिकता वैचारिक संकल्पना भर नहीं है। वह एक समाज भी है एक मनुवृत्ति भी।[5] उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य नवीन दृष्टिकोंण अपनाता है। विद्वानों की मान्यता है, कि वह पुरानी लेखन पद्धति अभिमाश बनावटी भाषा भारी भरकम शब्दों का त्यागकर हल्का–फुल्का सरल बोधगम्य शब्दों का प्रयोग करता है।सहज साहित्य का निर्माण करना ही उसकी पहली विशेषता है, ताकि साहित्य जन सामान्य के मन–मस्तिष्क में पैठकर उद्देश्य की पूर्ति कर सके। साहित्य में व्यंग्यात्मकता, विडम्बना, आत्मोपहास, लाक्षणिकता, प्रेषणीयता, बोधगम्यता हो जिससे पाठक सहज रसानुभूति कर सके। बोझिल साहित्य प्रत्येक को बोधगम्य नहीं है। नारी विमर्श, दलित विमर्श उपेक्षणीय पात्रों का चित्रण पिछड़े वर्ग अभिजनवादी धारणा का चित्रण उत्तर आधुनिक काव्य की सर्वाधिक विशेषता है।

सियाराम कहते हैं उत्तर आधुनिकतावाद आज के पूँजीवाद की विचारधारा है, जो ज्ञान की जगह अज्ञान का तर्क, की जगह तर्कहीनता का और विवेक की जगह विवेकहीनता का प्रचार–प्रसार करती है। इसका उद्देश्य लोागों का समाजवाद और साम्यवाद की दिशा में जाने से रोकता तो है ही साथ में पूँजीवाद का जनवाद को समाप्त करना भी है। उत्तर आधुनिकतावाद का सबसे प्रमुख तत्व है। अभिजनवाद (एलीटिज्म) जिसके द्वारा विशिष्ट और सामान्य लोंगों में भेद किया है। और सामान्य लोगों को अर्थात् गरीब, शोषित, उत्पीड़ित जनता और उसके पक्षधरों को नींची नजर से देखा जा सकता है। रिचर्ड रोटरी जो उत्तर आधुनिकतावाद के एक प्रमुख चिन्तक माने जाते हैं वे अपनी पुस्तक कान्टीजेन्सी आयरनी एण्ड सालिडैरिटी (1989) में बौद्धिक और सामान्य लोगों में यह भेद बतलाया है, कि बौद्धिक लोग आयरनिष्ट विडम्बनावादी होते हैं, जबकि सामान्य जीवन को गम्भीरता से लेते हैं। आजकल हिन्दी के लेखकों को अभिव्यन्जनावाद बहुत प्रभावित कर रहा है। गम्भीर लेख उत्तर आधुनिकतावादी लोगों की नजर में पुराना पिछड़ा हुआ और अपेक्षणीय लेखन है। श्रेष्ठ लेखन वह है जो विशिष्ट पाठकों के लिए किया जाय। मगर हल्का फुल्का हो जिसमें व्यंग विडम्बना भेदस और आत्मोपहास मिश्रण हो।[6]

उत्तर आधुनिकतावादी काव्य की निम्नलिखित विशेषताओं ने जनमानस को प्रमाणित करने का प्रयास किया। यथा उत्तर आधुनिकतावाद वर्ग विभेद का विरोधी है। दलित विमर्श, नारी विमर्श जीम से जुड़ी रचनायें इनका प्रमुख विषय विन्दु है। लोक कलाओं तथा पापुलर कल्चर के मेल मिलाप पर विश्वास रखता है। बहु केन्द्रीयता, बहुलता, बहुलसंस्कृतिवाद की विवेचना को विशेष स्थान देता है। आध्यात्मिकता, पराभौतिकता, का विरोध तथा बौद्धिकता, जीवन्तना, कर्मठता, संस्कृतिवाद, अभिव्यन्जनावाद पर विशेष बल देता है। कम्प्यूटरीकृत युग तकनीकि शिक्षा, मास–मीडिया, प्रौद्योगिकीकरण समाचार, दूर–दर्शन क्रान्ति का दिलोजान से स्वागत करता है।

उत्तर आधुनिकतावादी अतिहास, धर्म दर्शन यहॉ तक मानव के अन्त की घोषणा करते नजर आते हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति को स्वीकारता हैं। विखण्डनवाद, कन्द्रीयतावाद, संरचनावाद के अस्तित्व को बेझिझक स्वीकारता है। जाति–धर्म लिग भेद पर विचार करने को बाध्य है। महान–आख्यानों की अपेक्षा सरल–सादा यथार्थ जीवन की धारणाओं पर रचनाऍ लिखने हेतु प्रेरित करता है।

उत्तर आधुनिकतावादी काव्य के वैचारिक पक्ष में अकल्पनीय प्रश्नों, समस्याओं को साहित्य में उठाया गया है। निरन्तर हल ढूँढ़ने का भी प्रयास जारी है। अधिकांश साहित्यकार आधुनिकीकरण पर बल उपनिवेशवादी प्रवृत्ति पर लगाम कसना चाहता है। मानव का अन्त घोषित करते हुए भी मानव मूल्यों की प्रति स्थापना करने में पीछे नहीं हटता। डॉ0 रवि श्रीवास्तव मानते हैं कि ''जैनसन ने उत्तर आधुनिकता को नये बहुराष्ट्रीय सूचनाा तन्त्र एवं उपभोक्तावादी दौर के अनुरूप कहा है।[7]

विखण्डनवाद उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य का मूल बिन्दु है। डॉ0 पालीवाल कहते हैं ''उत्तर आधुनिकतावाद अपनी कोख से बंजर है इसके पास न कोई विचार धारा है न कोई दर्शन। इस उत्तर आधुनिकतावाद का दरवाजा उत्तर संरचनावाद (पोस्ट स्ट्रक्चरलिज्म) की ओर सुनता है। रूप रचनावाद, शैली–विज्ञान, नई समीक्षा विनिर्मितिवाद को निचोड़कर फ्रांससी संरचनावाद के भीतर से सातवें दशक में एक नया विचार, सम्प्रदाय, उत्तर संरचनावाद के रूप में उभरकर सामने आया है।[8]

डॉ0 जगदीश चतुर्वेदी का मानना है कि उत्तरआधुनिकतावाद अब बहुसंस्कृतिवाद या बहुलता पर आधारित नया विमर्श है। उत्तर आधुनिकता बहुकेन्द्रीयता की संकल्पना को लेकर चलती है ओर यह बहु केन्द्रीयता व्यक्ति की अपेक्षा समूहों की केन्द्रीयता है। उत्तर आधुनिकता ग्लाबल सेल है।[9]

देवेन्द्र इस्सर कहते हैं कि क्या कारण है कि जब भी साहित्य पर वैचारिक प्रभावों का उल्लेख होता है। (चाहे वह सृजनात्मक साहित्य हो या समालोचना) तो इसका स्रात प्रायः पाश्चात्य चिन्तन हो होता है? क्या हमारे आधुनिक साहित्य में स्वदेशी (राष्ट्रीय/जातीय/स्थानीय) चिन्तन जैसी कोई चीज नहीं जो इन प्रभावों को पाश्चात्य चिन्तन से बिलक कर सके? क्या हमारा साहित्यिक चिन्तन पश्चिम के चिन्तन तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों की अनुगूँज है? क्या हमारे साहित्यिक मूल्यांकन के अपने कोई स्वायत्त प्रतिमान नही? जब शताब्दी के अन्तिम चरण में पश्चिम में यह घोषणा कर दी गई कि इतिहास का अंत हो गया है, तो क्या यह वह समय नहीं कि हम तलाश तथा जिज्ञासा, चिन्तन एवं अनुभूति मनुष्य जीवन एवं सृष्टि के रहस्यों के उन सृजनात्मक स्रोतों को सामने लाये जिनसे हमारे साहित्य की संरचना होती है, जिनसे हमारे साहित्य ने महत्ता, महानता और अर्थ प्राप्त किया है और अपनी मौलिकता एवं निजता की पहचान दी है। वे ये भी कहते हैं क्या क्लासिकी भारतीय 'सौन्दर्यशास्त्र। दर्शन आधुनिक युग (जिसे अब उत्तर, आधुनिकतावाद का युग कहा जाने लगा है) की साहित्यिक सोच और संस्कृति में कोई अर्थ तथा महत्व रखते हैं या मुख्य इतिहास के पक्षों में दफन हो चुके हैं और अब अप्रासंगिक और वहम से बाहर हैं।[10] वे अपनी पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि सार्वभौमिक राष्ट्रीय/क्षेत्रीय/जातीय/कठिनाई तथा नारीवाद अथवा दलितवाद में साहित्य क्या रूप लेगा? क्या साहित्य केवल हाशिये पर लिखा जायेगा? जिसे महान आख्यान् (मेरा नेरेटिव) कहा जा रहा है क्या इसके खण्डित हो जाने से राष्ट्र के अर्थों की एनार्को नहीं फैल जायेगी? क्या नयी शताब्दी का साहित्य सामाजिक परिवर्तनों तथा राजनीतिक विचारधाराओं के लिए कच्चा माल उपलब्ध करायेगा या मनुष्य के अधिक अनुभव तथा मानवीय प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति का माध्यम बनेगा। वस्तु तथा विज्ञान के निरन्तर बढ़ते वर्चस्व के बावजूद मनुष्य तथा अन्य प्राणियों और मनुष्य तथा प्रकृति में मैगी एवं सहयोग की अधिक सम्भावनाएँ दिखाई देती हैं। मनुष्य कला, साहित्य तथा चिन्तन के नये धरातल की तलाश करेगा। यदि एक ओर रेस्ट्रो–रिवाइन तथा अतीत की व्याख्यायें होंगी तो दूसरी ओर भविष्य की पुनर्कल्पना भी होगी। सृजन के क्षितिज सीमित नहीं विस्तृत होंगे।[11] साहित्य की स्वायत्तता से तात्पर्य ''विशुद्ध साहित्यिक मूल्यों की बहाली नहीं, अपितु साहित्यिक चिन्तन मूल्य, सच्चाई और सौन्दर्य के सम्पूर्ण पैटर्न और अन्य शास्त्रों के स्वतन्त्र गतिशील आदा–प्रदान से है।[12]

देवेन्द्र इस्सर यद्यपि साहित्य को लिखित या फिक्शन मानते है' पर उसे विस्तृत दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं।'' वे कहते हैं उत्तर संरचनावाद का प्रमुख साहित्यिक नारा है कि किसी भी पाठ को किसी भी तरह लिखा–पढ़ा जाना सम्भव है। यही नहीं किसी भी पाठ की किसी भी वर्गीकरण के तहत तथा सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक,लिंग–जाति–वर्ग–वर्गवादी तथा विचारधारात्मक व्याख्या सम्भव है और ऐसी सब व्याख्यायें उचित है, तो किसी साहित्यिक कृति को कलात्मक यह अपनी विचार पद्धति से भिन्न या मुक्त अध्ययन को ही क्यों निशाना बनाया जा रहा है।[13]

उत्तर आधुनिकतावादियों ने तकनीकी को मानव की सबसे बड़ी कमजोरी मानी है। विकेन्द्रीयता उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषता है। ज्ञान एवं शक्ति प्रमुख केन्द्र है। महावृतान्त सांस्कृतिक विकास में सबसे बड़ा घातक कहा है। कृष्णदन्त ने उत्तर आधुनिकतावाद की प्रमुख वैचारिक सिद्धान्तों एवं विशेषताओं का उल्लेख किया है जो निम्नलिखित हैं– विकेन्दीयता, चिन्हवाद का यथार्थ, मुक्त अर्थ व्यवस्था एवं बहुराष्ट्रीय पूँजीवाद, नैतिक विजन का ह्रास संकेतों की अराजक व्यवस्था के लिए स्कोप, अन्तविद्यालयी दृष्टि की महिमा, करता का अन्त, दो विपरीत समूहों का जुड़ना या विरोधों में सामन्जस्य, अस्मिता की पहचान या अपनी जड़ों की तलाश, भाषागत क्रान्ति प्रमुख संघर्ष विकेन्द्रित केन्द्र विभिन्न मत, लोकप्रिय संस्कृति, अन्तवाद नारा नहीं महानायकों का अन्त विच्छेदकारक दर्शन का संकेत स्थानीयता इत्यादि।[14]

निष्कर्ष

उत्तर आधुनिकतावाद की वैचारिक पृष्ठिभूमि विस्तृत फलक लिये हुए है। इसमें ज्ञान शक्ति का मिश्रण है। ये विज्ञापन, इतिहास, वैश्वीकरण, स्त्रीविमर्श, दलितविमर्श, यौनवाद, मासमीडिया, डिजिटलाइजेशन, क्रान्तिकम्प्यूटर शिक्षा को नवीन पृष्ठभूमि पर अंकित कर उसकी विशिष्टता और उपयोगिता बताता है। जिसे विद्वानों ने पैराडाइज शिफ्ट या वैश्विक दृष्टि अथवा विराट दृष्टि कहा है। भोगवाद, देहवाद उन्मुक्त यौनवाद के प्रति सचेतना जागृत करती है। समलैंगिक विषयों पर चर्चा करता है। सांस्कृतिक क्रान्ति पर बल देते हुए पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को दर्शाती है। समलैंगिकता, सहवास, जैसे शब्दों का प्रयोग खुलकर करने में उसे संकोच नहीं होता है। यौनक्रान्ति, सांस्कृतिक अस्मिता की खोज करना उसका धर्म है। पुरानी घिसी–पिटी मान्यताओं परम्पराओं का खण्डन, जाति–संघर्ष करना इसका लक्ष्य है। इलेक्ट्रॉनिक इन्फॉमेशन बायोटेक्नलॉजी के नवीन आर्थिक तन्त्र आधुनिकतावाद के वैचारिक सिद्धान्तों में शामिल है। अभिजातवाद और अधिनायकवाद की स्थिति को नकार कर अभिजनवाद को महत्व देता है। उत्तर आधुनिकतावाद की यही विशेषताएं उसे आधुनिकतावाद से अगल श्रेणी में ला खड़ी करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उत्तर आधुनिकता– डा0 आशीष सिसोदिया (आलेख से)*
2. *नया जमाना जगदीश्वर चतुर्वेदी, कलकत्ता विश्वविद्यालय (व्याख्यान 29 जून 2010)*
3. *नया जमाना जगदीश्वर चतुर्वेदी, कलकत्ता विश्वविद्यालय (व्याख्यान 29 जून 2010)*
4. *उत्तर आधुनिकता विनम्र और यथार्थ–रवि श्रीवास्तव–पृष्ठ 12*
5. *उत्तर आधुनिकता विनम्र और यथार्थ– रवि श्रीवास्तव (आधुनिकता की पहचान शीर्षक)*
6. *उत्तर आधुनिकता विचार मूल्यांकन, डा0 सियाराम, सम्पादक डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव।*
7. *उत्तर आधुनिकताः विनम्र और यथार्थ–डॉ0 रवि श्रीवास्तव*

8. *उत्तर आधुनिकता की ओर (उत्तर आधुनिकता का भूत शीर्षक से) पृष्ठ 7 कृष्णदन्त पालिवाल*
9. *उत्तर आधुनिकतावाद जगदीश्वर चतुर्वेदी पृष्ठ 58*
10. *उत्तर आधुनिकताः साहित्य और संस्कृति की नयी सोच देवेन्द्र इस्सर पृष्ठ 17–18*
11. *उत्तर आधुनिकता साहित्य और संस्कृति की नयी सोच–देवेन्द्र इस्सर (भूमिका) पृष्ठ 23*
12. *उत्तर आधुनिकता साहित्य और संस्कृति की नयी सोच देवेन्द्र इस्सर पृष्ठ 62*
13. *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर पृष्ठ 56 कृष्णदन्त पालीवाल*
14. *उत्तर आधुनिकता– डॉ0 आशीष सिसोदिया (आलेख से)*